ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 429-431
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

बिहार के बौद्ध महाविहारों का अध्ययनः नालन्दा महाविहार के सन्दर्भ में

राहुल कुमार झा
एम0 ए0, इतिहास स्वर्ण पदक शोध अध्येता, पाटलिपुत्रविश्वविद्यालय, पटना (बिहार), भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: dr.ramnyadav@gmail-com

सारांश : ***'बिहार के बौद्ध महाविहारों में नालन्दा महाविहार उच्च शिक्षा का विश्व विख्यात अध्ययन संस्थान था। नालन्दा महाविहार में देश ही नहीं विदेशों से भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए तांता लगा रहता था। ह्वेनसांग के मतानुसार नालन्दा महाविहार में प्रवेश पाना दुष्कार कार्य था। नालन्दा महाविहार में प्रवेश करने हेतु प्रवेश द्वारा पर नियुक्त द्वारपण्डितों के द्वारा महाविहार में प्रवेश पाने वाला विद्यार्थीयों की प्रवेश परीक्षा ली जाती थी। चुँकि ये विद्वान अपने-अपने विषयों के विशेषज्ञ होते थे। अतः ये विद्यार्थीयों की योग्यता तथा प्रतिभा की परीक्षा लेने के लिए दार्शनिक विषयों तथा जटिल समस्याओं पर के प्रश्न पूछते थे।[1] नालन्दा महाविहार के स्नातकों का विश्वभर में बड़ा आदरणीय स्थान था और देश में कोई भी उनकी सामानता नहीं कर सकता था। नालन्दा महाविहार में प्रवेश के लिए विद्यार्थीयों की एक आयु सीमा होती थी। समान्यतः बीस वर्ष से कम अवस्था के छात्र नालन्दा में प्रविष्ट नहीं किये जाते थे। धर्मपाल और शीलभद्र जैसे प्रसिद्ध आचार्यों ने भी यहाँ बीस वर्ष की आयु में प्रवेश लिया था।[2]***

कुंजीभूत शब्द– महाविहार, विश्वविख्यात, दुष्कार, विशेषज्ञ, योग्यता, प्रतिभा, दार्शनिक, विश्वभर, आदरणीय।

नालन्दा महाविहार का पूर्ण विकास गुप्तकाल में ही हुआ था। तब से लगातार सात सौ वर्षों तक नालन्दा महाविहार क्रमशः गुप्त, वर्धन, पालवंशी के राजाओं को संरक्षण में नालन्दा महाविहार ज्ञान का केन्द्र बना रहा। नालन्दा महाविहार से ही ज्ञान की वत ललकार उठी थी– वह 'श्रृष्वन्तु विझे अमृतस्य पुत्राः' की उत्साहवर्धक पुकार।[3]

नालन्दा महाविहार गुप्तकाल का प्रमुख बिहार माना गया है। इस महाविहार में भिक्षुओं के शयनासन के लिए कंकरीट के बने चबुतरों की मोटाई दीवारों के बराबर है। एक कोठरी में एक या दो शयनयान बना था, जिसकी बगल में ही आलमारीनुमा ताखें है। ये आलमारियाँ भिक्षुओं की पुस्तकों और मुर्तियों के रखने में काम आती है। नालन्दा महाविहार में समुद्रगुप्त, धर्मपाल और देवपाल के ताम्रपट् मिला है। नालन्दा महाविहार में ही यशोवर्मन का शिलालेख भी मिला था।[4]

नालन्दा महाविहार इतना प्रसिद्ध था कि अगर कोई नालन्दा का नाम चुरा लेता तो उसके भाई को भी सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता था।[5] इस प्रकार नालन्दा महाविहार की प्रसिद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि का श्रेय यहाँके आचार्यों को ही जाता है। यहाँ के आचार्यों की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई थी। ये सभी विद्वान मात्र अच्छे शिक्षक ही नहीं अपितु विभिन्न ग्रंथों के रचयिता भी थे। इन प्रसिद्ध आचार्यों के अतिरिक्त नालन्दा में अन्य अनेक विद्वान भी थे, जिन्होंने विद्या के प्रकाश को पूरे देश के साथ विदेशों में भी अलोकित किया। इन्होने विदेशी राज्यों में जाकर बौद्ध धर्म और ज्ञान का प्रसार करने का काम किया। इस प्रकार भारत के अन्य देशों के साथ सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृति सम्बन्धों का आदान-प्रदान भी हुआ। इसी कारण भारतीय धर्म और संस्कृति का विदेशों में भी प्रसार हुआ।

बिहार के बौद्ध नालन्दा महाविहार के कुछ प्रमुख आचार्य एवं उनकी रचनाएँ।

'असंग' नालन्दा महाविहार के प्रसिद्ध आचार्यों में से एक है। इन्होंने अपने जीवन के उन्तीस बारह वर्ष नालन्दा महाविहार में पुरोहित के रूप में बिताया। यह नालन्दा महाविहार से उस समय जुड़े जब नालन्दा महाविहार विकसित हो रहा था।[6] असंग ने अनेक ग्रंथों कि रचनाएं कि जिसमें प्रमुख ग्रंथ थे–

महायान– सम्परिगृह, प्रकरण– आर्यावच, योगाचार सूत्रालंकार।

योगाचार– भूमिशास्त्र मुख्य रूप से संस्कृत भाषा की रचना थी। असंग द्वारा लिखित लेख चीनी और तिब्बती भाषा में मिलते है।[7]

वसुबन्धु असंग के समकालीन थे और इनके बाद नालन्दा महाविहार के आचार्य बने। वसुबन्धु ने गुप्त नरेश बालादित्य को बौद्ध धर्म स्वीकार करने में सहयोग किया और नालन्दा में अपनी विशेष रूचि दिखायी।[8]

दिनंग भी नालन्दा के एक महान पण्डित था। ये वसुबन्धु के शिष्य थे। पुरानी कथाओं के अनुसार दिनंग एक गुफा में रहते थे जहाँ नालन्दा के पंडितों ने इन्हें एक ब्राह्मण से शास्त्रार्थ करने के लिए भेजा गया और इस शास्त्रार्थ में इन्होंने ब्राह्मण को पराजित किया।[9] दिनंग ने मध्ययुग की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नवीन तक शैली का आविष्कार किया था। दिनंग ने तर्कशास्त्र पर लगभग एक सौ पुस्तकों की रचनाएं की।[10]

अन्य आचार्यों में गुणमति एवं स्थिरमति, धर्मपाल, धर्मकीर्ति, चन्द्रगोमिन, शीलभद्र, शान्तिरहित पद संभव, कमलाशील, चन्द्रकीर्ति, वीरदेव एवं बुद्धकीर्ति थे; जिनहोंने नालन्दा महाविहार को विश्व के प्रमुख संस्थानों में से सर्वोत्तम बनाया।[11]

आठवीं शताब्दी से नालन्दा के विद्वानों ने चीन, कोरिया, जापान और लंका आदि देशों में ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए भ्रमण करन प्रारम्भ कर दिया।[12] उस समय से नालन्दा के विद्वानों ने बौद्ध धर्म और संस्कृति का तिब्बत में प्रचार किया। इस कार्य में चन्द्रगोमिन शान्तिरक्षित और पदमसंभव ने विशेष योगदान दिया। इन्होंने तिब्बत में अध्ययन–अध्यापन का कार्य किया, अनेक बौद्ध शिक्षाओं का प्रचार किया और अनेक संस्कृत बौद्ध ग्रंथों का तिब्बती भाषा में भी अनुवाद किया।[13] नालन्दा महाविहार के अनेक विद्वानों ने चीन की यात्रा की थी। चीन जाने वाले विद्वानों में धर्मदेव, सुमाकर सिन्हा का नाम उल्लेखनीय है।[14]

लेखन कार्य में अनेक लिपियों के विकास और प्रसिद्ध आचार्यों के कारण नालन्दा एक अर्न्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बन गया था। नालन्दा महाविहार के अपनी 'मोहर' भी थी जिस पर 'श्री नालन्दा महाविहार आर्य भिक्षु संघस्य' लिखा हुआ था। अनेक छोटे विहारों ने नालन्दा विश्वविद्यालयों से मान्यता प्राप्त की थी और उनकी अपनी मोहरे भी होती थी।[15]

नालन्दा बौद्ध शिक्षा का एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था और इसकी कृति विदेशों तक फैली हुई थी। इस प्रमुख शिक्षा केन्द्र ने अनेक विदेशी छात्रों ओर बौद्ध शिक्षाओं के अध्ययन के लिए आर्कषित किया था। यहाँ चीन, तिब्बत, कोरिया, मंगोलिया, आदि देशों के विद्यार्थी अध्ययनार्थ आते रहे।[16] नालन्दा पहुँचने के लिए उन्हें मरूस्थलों पर्वतों तथा जंगलों को पार कर अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता था।[17]

विदेशी यात्रियों में ह्वेनसांग का नाम सबसे महत्वपुर्ण है। ह्वेनसांग प्रथम चीनी यात्री था। जिसने भारत में लगभग 16 वर्षों तक व्यतीत किए जिसमें पांच वर्षों तक नालन्दा में विद्याध्ययन किया। ह्वेनसांग ने यहाँ पर शीलभद्र से योगशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की।[18] ह्वेनसांग ने योगशासक का तीन बार विस्तृत व्याख्याएं सुनी थी। इसके अतिरिक्त ह्वेनसांग ने अन्य विषयों की भी शिक्षा ली थी।[19] ह्वेनसांग ने वेद, चिकित्सा, अंतरिक्ष, भुगोल, गणित आदि विषय की भी शिक्षा ली थी।[20] भारत आनेवाले दूसरा प्रमुख चीनी यात्री इत्सिंग था। इत्सिंग, ह्वेनसांग के तीस वर्षों के बाद भारत आया था। उन्होनें दस वर्षों तक यहाँ अध्ययन–अध्यापन का कार्य किया था। यह 671 ई0 में ताम्रलिपि पहुँचा और यहाँ रहकर इसने संस्कृत और शब्द विद्या का अध्ययन किया था।[21]

अन्य विदेशी यात्रियों में ह्वेन–चाओं जो नालन्दा में तीन वर्षों तक रहा, ताओ–ही जिसका संस्कृत नाम श्रीदेव था, नालन्दा में रहकर संस्कृत विजनय और महायान अध्ययन किया। इसने नालन्दा में रहकर चार सौ सुत्र और शास्त्रों प्रतियाँ तैयार की।[22]

बिहार के बौद्ध महाविहार 'नालन्दा महाविहार ग्यारहवीं' शताब्दी तक न केवल भारत में सम्पूर्ण विश्वभर में सर्व प्रसिद्ध था। लम्बे समय तक विश्व में अपना प्रकाश फैलाने वाले यह महाविहार पतन की ओर उन्मुख हुआ। उच्च शिक्षा केन्द्र के अतिरिक्त नालन्दा एक कला केन्द्र भी था।[23] नालन्दा महाविहार में शिक्षकों की संख्या 1510 थी।[24] नालन्दा महाविहार में विद्यार्थीयों की संख्या 3000–5000 के बीच रही होगी। चीनी यात्री के विवरण के आधार पर।[25]

बिहार का सबसे विख्यात बौद्ध महाविहार नालन्दा महाविहार था। ह्वेनसांग के अनुसार नालन्दा महाविहार का भरण–पोषण एक सौ गावों के राजस्व से होता था। उत्खनन से पता चला है कि नालन्दा महाविहार एक मील लम्बा और आधा मील चौड़े क्षेत्र में स्थित है। नालन्दा महाविहार विशाल बौद्ध महाविहार था, जहाँ हजारों विद्यार्थी निवास करते थे। नालन्दा महाविहार में गुरू–शिष्य सम्बन्ध अत्यंत मधुर था। नालन्दा उच्च शिक्षा का विश्व प्रसिद्ध महाविहार था। देश ही नहीं विदशों में भी इस बौद्ध महाविहार का ख्याति था। यह एक आदर्श विद्यालय था। भारतीय शिक्षा के सभी उच्च आदर्श उसमें वर्तमान थे। कोलाहलपूर्ण संसार से दूर निर्मल जलाशयों और सुविस्तृत आम्रकाननों से सुशोभित शान्त एवं सात्त्विक तपोवन में, इसकी स्थापना हुई थी। तपोवन और तपोमय जीवन, यही इसकी महत्ता का रहस्य था। इसके भव्य भवनों, मनोहर मन्दिरों और सुवारू चैत्यादिकों के देखने और इसके विश्वव्यापी पवित्र प्रभाव का चिन्तन करने से ह्रदय में अनेक कोमल और किशोर भावनाएँ जाग उठती है। कई सौ वर्षों का इतिहास आँखों के सामने नाच उठता है।[26]

आगरे के प्रसिद्ध 'ताजमहल' पर अनेक कवियों ने अनूठी उक्तियाँ कहीं हैं। पर नालन्दा के भग्न, किन्तु दिव्य बिहारों और संघारामों पर उनका ह्रदय नहीं पसीजा। नालन्दा अनेक तपस्वी महात्माओं के यश–सौरभ से सुरभित है। इसमें ह्रदतंत्री झंकृत करने की पर्याप्त सामग्री है। इस तीर्थ–भूमि का प्रत्येक रेणु–क्रम भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण है। इसके दर्शन से ऐसा भासित होता है, मानो

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

प्राचीन भग्न–मन्दिरों से बौद्ध–भिक्षुकों की पवित्र आत्माएँ संसार के कल्याण के निमित्त दिव्य ज्ञान का आलोक लिए हुए निकल रही हैं। यहाँ का सारा वायुमण्डल इस पवित्र मन्त्र से गूँजता हुआ सा प्रतीत होता है–

"धर्मं शरणं गच्छामि, बुद्धं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि"।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाटर्स, थामस, और स्वान–च्वांग ट्रेवल्स इन इण्डिया रिजडेविड, टी0 डब्लू, बुशैल, एस0 डब्लू0 दिल्ली 1973 पृष्ट– 165.
2. शंकालिया, एच0 डी0 दे युविर्सिटी ऑफ नालन्दा दिल्ली, 1972, पृ0 171.
3. शास्त्री, आचार्य चतुरसेन, महात्मा बुद्ध और बौद्ध धर्म, परशुराम हिन्दी संस्थान, दिल्ली, 2008 पृष्ठ 185.
4. सह्रदय, त्रिपाठी श्री हवलदार, बौद्ध धर्म और बिहार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना–3, पृ0– 253–254.
5. वाटर्स, वही पृष्ट– 185.
6. मुकर्जी, आर0 के0, एन्शियन्ट इण्डियन एजुकेशन दिल्ली, 1969, पृ0– 580.
7. विद्याभुषण, एस0 सी0 इण्डियन लॉजिक, मिडिल स्कुल कलकत्ता, 1909, पृ0– 74.
8. बाप्ट, पी0 वी0 स0, इयर्स ऑफ बुद्धिज्म, दिल्ली, 1956, पृ0– 223.
9. त्रिपाठी, एच0 बुद्ध धर्म और बिहार, पटना– 1960 पृ0– 209.
10. शंकालिया, एच0 डी0 वही पृ0– 125.
11. घोषाल, यू0 एन0 प्रोगरेस ऑफ बुद्धिस्ट स्टडी इन यूरोप एण्ड अमरीका, बाप्ट पी0 वी0 पृ0– 409.
12. बोस, पी0 एन0 इण्डियन टीचर्स ऑफ द बद्धिस्ट यूनिर्वसिटी मद्रास, 1923, पेज– 58–59.
13. मुखर्जी, वही, पृष्ट– 135.
14. बोस, पी0 एन0 द इण्डियन टीचर्स इन चाइना, मद्रास 1923, पृष्ट– 119, 130–135.
15. चौधरी, आर0 के0, प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास, पटना– 1983, पृ0– 472.
16. बील, सैमुअल, द लाइफ ऑफ ह्वेनसांग दिल्ली 1973, पृ0–**XXVIII-**
17. वाटर्स, वही, पृष्ट– 12.
18. शंकालिया, एच0 डी0 वही, पृष्ट– 221.
19. बील, लाइफ, वही पृष्ट– 121.
20. चान, टी0 एम0 ह्वेनसांग द पिल्ग्रिम एण्ड स्कॉलर वियतनाम, 1963, पृष्ट– 72.
21. इत्सिंग, द रिकार्ड ऑफ द बुद्धिस्टि रिलिजन, टकाकुस जे (अनु0) दिल्ली, 1996 पृ0–XXXVII-
22. मुकर्जी, आर0 के0 वही, पृष्ट– 579.
23. शंकालिया, एच0 डी0, वही0 पृष्ट– 267.
24. शंकालिया, वही पृष्ट– 195–196.
25. मुकर्जी, वही, पृष्ट 565.
26. शास्त्री आचार्य चतुरसेन, वही, पृष्ठ 205.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*